07.2020

Dr. Purnima Singh
Department of Political Science
B.A 1st year. part 2 political theory
Topic - peace. Lecture - 61

शान्ति (Peace) - 2.

शान्ति का अर्थ सामान्य रूप से किसी प्रकार के युद्ध के अभाव या अनुपस्थिति से लिया जाता है। अतः कहा जा सकता है कि विश्व के सभी देश दूसरे देश के साथ शान्ति व अहिंसा जैसे श्रेष्ठ सिद्धान्तों के आधार पर एक-दूसरे के साथ सम्बन्ध स्थापित करेंगे तथा अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना को बनाए रखेंगे।

~~संरचनात्मक हिंसा के विभिन्न रूप~~. विश्व के राज्य 1928 के केलाग-ब्रियां समझौते (Kellogg Briand pact) का आकलन कर सकते हैं जिसमें कहा गया था कि वे अपनी राष्ट्रीय नीति के यन्त्र के रूप में युद्ध का परित्याग करते हैं। 1946 में जापान के संविधान में ऐसा प्रावधान रखा गया जिससे उसे 'शान्ति का संविधान' (Peace Constitution) कहा गया। ऐसा प्रावधान भारत, जर्मनी व रूसी संघ के संविधानों में भी रखा गया है।

शान्ति का वास्तविक अर्थ यह है कि बड़े स्तर पर युद्ध का त्याग होना चाहिए क्योंकि इससे मानव जाति को धन व जन की गम्भीर हानि होती है। युद्ध की निन्दा करके विवादों के शान्तिपूर्ण समाधान पर बल दिया जाना चाहिए। लेकिन कोई ऐसी अपवादस्वरूप स्थिति भी हो सकती है जब युद्ध अटल या अपरिहार्य हो जाये। इसी को टी०एच० ग्रीन ने 'क्रूर अनिवार्यता' कहा है।

महात्मा गांधी ने भी यही कहा है कि हर व्यक्ति व हर राष्ट्र को अपना मान-सम्मान सुरक्षित रखने का पूरा अधिकार है।

इस दिशा में हम आदर्शवादियों व यथार्थवादियों के बीच मतभेद का अवलोकन कर सकते हैं। एक ओर कैंट (Kant) व ग्रीन (Green) जैसे दार्शनिक तथा अमरीकी राष्ट्रपति विल्सन (Wilson), फ्रैंच विदेश मन्त्री ब्रियां (Briand) तथा भारत के प्रधानमंत्री नेहरू जैसे राजनेतागण हैं जो निम्न बिन्दुओं पर बल देते हैं—

1. मनुष्य अनिवार्य रूप से भला व शान्तिप्रिय जीव है जो परस्पर सहयोग व सद्भावना से जीवित रहना चाहता है।
2. यदि मनुष्य बुराई का मार्ग चुनता है तो वह सामाजिक आर्थिक व राजनीतिक क्षेत्र में फैले हुए पर्यावरण के कारण है, अतः बाहरी परिस्थितियों को सुधार कर मनुष्य के अच्छे आचरण को सुरक्षित रखा जा सकता है।
3. युद्ध एक अभिशाप है जिससे बचना चाहिए, कोई अन्तर्राष्ट्रीय संगठन विश्व शान्ति को बनाये रख सकता है।

इसके विपरीत भारत के कौटिल्य, इटली के मैकियावली, इंग्लैण्ड के हॉब्स तथा जर्मनी के हीगल जैसे दार्शनिक तथा इटली के मुसोलिनी जर्मनी के हिटलर तथा चीन के माओ जैसे राजनेतागण शान्ति को कायरों का सपना कहकर प्रबल शब्दों में युद्ध की प्रशंसा करते हैं।

शान्ति के उपागम

(1) संस्थानिक उपागम (Institutional Approach)
यह कहा जाता है कि क्षेत्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों पर ऐसी संस्थाएँ बनायी जायें जो युद्ध को

रोककर शान्ति स्थापित करें। उदाहरण के लिए यूरोपीय संघ (EU) यूरोप के देशों एवं आसियान (ASEAN) दक्षिण-पूर्वी एशिया के देशों के बीच अच्छे सम्बन्ध बनाये हुए हैं। ऐसी संस्थाएं किसी विशेष क्षेत्र में ही सफल हो सकती है। लेकिन सारी दुनिया दुनिया को समाहित करने हेतु कोई राष्ट्र संघ (League of Nations) या संयुक्त राष्ट्र संघ (United Nations Organization) अनिवार्य है। यह विचार व्यावहारिक दृष्टि से अच्छा है किन्तु कोई आलोचक यह कह सकता है कि ऐसी व्यवस्थाओं में कुछ कमियाँ हैं जिनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

2. प्रकार्यात्मक उपागम (Functional Approach) यह सच ठीक है कि विश्व शान्ति को बनाये रखने के लिए क्षेत्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संस्थाएं हैं, लेकिन उन्हें उनके कार्यों के निष्पादन की दृष्टि से देखा जाना चाहिए। केवल ऐसी संस्थाएं बना लेना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उन्हें राष्ट्रों के बीच परस्पर निर्भरता व सहयोग भी स्थापित करना चाहिए। ऐसी संस्थाएं संघात्मक आधार पर कार्य कर सकती है और उन्हीं के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति सुरक्षा व सहयोग को बढ़ाना मिल सकता है। इस दिशा में प्रगति विश्व सरकार (World Government) की ओर ले जायेगी।

3. उपचारात्मक उपागम (Curative Approach) — इस मत के मानने वालों का यह आग्रह है कि सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक बुराईयों (जैसे, गरीबी, बीमारी, बेकारी, शोषण, उत्पीड़न अन्याय, भुखमरी, निरक्षरता, जातीय व नस्लीय अन्याय आदि) विश्व शान्ति की स्थापना के मार्ग में बाधाएं हैं।

इनके निराकरण से विश्व शान्ति बरकरार रखी जा सकती है।

4. पग-पग प्रगति उपागम (Step-by-step Approach) - यही भी कहा जाता है कि विश्व शान्ति के लक्ष्य को एकदम या शीघ्रता से सिद्ध नहीं किया जा सकता है। धीरे-धीरे कदम बढ़ाकर आगे चलना चाहिए।

5. अनेक-मुखी-उपागम (Many-Fronts Approach) इसमें उपर्युक्त सभी उपागमों का समावेश देखा जा सकता है। यह माना जाता है कि विश्व शान्ति की स्थापना एक बहुमुखी या बहुआयामी समस्या है, अतः सभी प्रकार के उपाय किये जाने चाहिए।

शान्ति अनुसन्धान आन्दोलन

शुद्ध व्यवहारवादियों द्वारा अपनाया गया एक अन्य उपागम 'शान्ति अनुसन्धान' का उपागम है जिसमें उच्च आशावाद की ओर गहरा झुकाव देखा जा सकता है।

यह विचार प्रथम विश्व युद्ध के बाद बहुत लोकप्रिय हो गया जब इंग्लैण्ड में लीविस रिचर्डसन ने तथा संयुक्त राज्य में Quincy Wright ने अपने योगदान प्रस्तुत किये। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व शान्ति के आन्दोलन में तीव्रता आयी। Albert-Einstein ने 1945 में अणुबम के प्रयोग पर गहरा शोक प्रकट किया। यही पगवाश आन्दोलन का आधार बना।